

नवरत्न संदेश

प्रधान संपादक- राकेश मारवाड़ी वर्ष-5

अंक-03

इन्दौर, दिसंबर 2016

पेज-8

मुल्य-5 रुपये

Email- jinshashan@gmail.com

उपधान माला रोपण के साथ शंखेश्वर चतुर्मास समापन

200 आराधकों ने किया मोक्षमाला परिधान

» उपधान तप में 200 आराधक से आगम मंदिर में श्रमण महोत्सव का माहौल बना।

» 18 जनवरी को श्री पंकजभाई गांधी दीक्षित होंगे।

» 17 जनवरी को मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरेश्वरजी की प्रथम पूण्यतिथि।

» फरवरी के अंतिम सप्ताह में अहमदाबाद में शासन प्रभावक कार्यक्रम होगा।

» फरवरी के बाद मालवा विहार की संभावना।



शंखेश्वर। पूज्यपाद आचार्य गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरेश्वरजी महाराज के देह त्यागने के बाद अपने जीवन का सबसे यशस्वी और गरिमामय चतुर्मास श्री शंखेश्वर महातीर्थ की पुण्य भूमि पर स्थित आगम मंदिर में दादा चरम तीर्थ का परमात्मा श्री प्रभुवीर की छत्रछाया में कर युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरेश्वरजी म.सा. ने शासन प्रभावना में चार चांद लगा दिये। यही नहीं अनेक विशिष्ट आयोजनों के साथ श्रावक से श्रमण बनने के अनुष्ठान को उपधान तप के आयोजन के साथ १८ जनवरी २०१७ को मुंबई के सुश्रावक श्री पंकजभाई गांधी का संयमोत्सव भी परमात्मा के शासन की अभिवृद्धि में सहायक बनेगा। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री रहते आपश्री गुरुदेवश्री की १६ दिवसीय मौन सूरिमंत्राराधना की उत्तम व्यवस्था का भार संभालते आये हैं। अब आपश्री इस चतुर्मास में प्रथम बार सूरिमंत्राराधना का अनुष्ठान मौन साधना की। इन सब धर्म शासन प्रभावना के कार्यों में बढ़े योगदान के

रूप में शंखेश्वर महातीर्थ का चतुर्मास यादगार धर्मानुष्ठान के रूप में जाना जाता रहेगा। मणियार श्री वेलजीभाई माणकचंद्र परिवार के द्वारा भी गुरु भक्ति ऋण को उतारने के लिये कराये गये अभूतपूर्व चतुर्मास के रूप में याद किया जाता रहेगा। अभी उपधान तप की माला और १८ जनवरी २०१७ को

श्री पंकजभाई गांधी का दीक्षा महोत्सव प्रसंग बाकी है। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरेश्वरजी म.सा. २ फरवरी २०१७ को अर्जन प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये जीरावला पधारेंगे। इसके बाद अहमदाबाद तथा अन्य स्थानों पर धर्मानुष्ठान करते हुए मालवा की ओर विहार होगा।



नवरत्न संदेश

शुभाशीर्वाददाता

जन-जन की आस्था एवं श्रद्धा के केंद्र महान
तपस्वी प.पू. मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्न
सागर सूरेश्वरजी म.सा.

मंगल प्रेरणा स्रोत

जिन शासन हित चिंतक युवा हृदय

सम्राट प.पू.आचार्य भगवंत श्री

विश्वरत्नसागर सूरेश्वरजी म.सा.

**नवरत्न परिवार की
राष्ट्रीय कार्यकारिणी**

संरक्षक

श्री ललित सी. जैन, इंदौर 9425107692

श्री रमेश कुमार हरण, बैंगलोर 9845061920

सलाहकार बोर्ड अध्यक्ष

श्री सी.ए. प्रतीक डोसी, मंदसौर 9826081300

अध्यक्ष

श्री पवन सुराणा, आष्टा 9926685705

उपाध्यक्ष

श्री नरेन्द्र भाई वाणीगोता, मुंबई 9820632733

श्री प्रीतिश ओस्तवाल, इंदौर 9425312035

श्री धर्मचंद्र जैन, नागेश्वर 9425491062

श्री संजय धारीवाल, हाटपिल्लिया 9009718722

महासचिव

श्री राकेश मारवाड़ी, प्रतापगढ़ 9414308595

कोषाध्यक्ष

श्री महेश जैन तहलका, मंदसौर 9425105511

प्रबंधक

श्री जितेन्द्र पोरवाल, दलौदा 9425105921

प्रवक्ता

श्री प्रशांत सकलेचा, नलखेड़ा 9425318888

संगठन मंत्री

श्री अनुदीप चौहान, उन्हैल 9098274736

श्री संजय मेहता, झुंजरपुर 9414104805

श्री मुकेश गांधी, सागवाड़ा 9414567830

श्री सुदर्शन मंडोवरा, देपालपुर 9926033009

आमंत्रित सदस्य

श्री दिनेश बाफना, खम्मम 9490704495

श्री मुकेश बम, लिमड़ी 9825998750

श्री नीतू भाई वोरा, सतना 9893035572

श्री मुकेश जैन सांचोर, मुंबई 9920702721

श्री श्रेणिकजी जैन, भीलवाड़ा 9167972953

श्री सतीश नाहर, बाजना 9424020097

मध्यप्रदेश अध्यक्ष

श्री रविवर विजावत, बड़ौदा 9630364555

राजस्थान अध्यक्ष

श्री प्रवीण संघवी, कोटा 9414188045

वागड़ प्रदेश अध्यक्ष

श्री सुबोध सरैया, झुंजरपुर 9414104677

संकल्प

माता के उपकार चुका सकते हैं।

दाता के उपकार चुका सकते हैं।

पर करोड़ों जीवन में भी गुरुदेव के

उपकार को चुका नहीं सकते हैं।



संपादकीय

राकेश मारवाड़ी



आस्था देता है रास्ता

क या सच में आप अपनी जिंदगी को बदलना चाहते हैं। खुशियों की दौड़ में आगे बढ़ना चाहते हैं। जिंदगी के हर लम्हे को खुशहाल बनाना चाहते हैं। सबसे कुछ अलग करना चाहते हैं। इन सभी चीजों को हासिल करना चाहते हैं, आइए हमारे साथ कुछ टिप्स आपको दे रहा हूं। आज की सच्चाई का आइना आपको दिखा रहा हूं। आइना देख कर पहचानें आप क्या हैं?

कर्ज और मर्ज से बचें। अपनी जिंदगी में खर्चा तभी बढ़ाए, जब कमाई बढ़ाई जा सके। कर्ज देने के लिए बैंक एवं फाइनेंस कंपनियां आपका इंतजार कर ही है। वे सिर्फ इंतजार नहीं कर रही, आपकी जमीन-जायदाद को गिरवी रखकर कर्ज दे रही है। चाणक्य ने नीति शास्त्र में लिखा

है- आप व्यापार के लिए कितना भी कर्जा ले लो, मगर अपने रहने के निवास कोकभी भी गारंटी या गिरवी मत रखो, क्योंकि वह तुम्हारे अकेले की संपत्ति नहीं है। पूरे परिवार के रहने की जगह है। सुजान पुरुषों को इस मुख्य नियम का पालन करना चाहिए।

इंटरनेट पर सभी जानकारीयां उपलब्ध है। अध्ययन करें। विशेषज्ञ (एक्सपर्ट) इंटरनेट पर उपलब्ध है एवं कृपया उन्हीं की सलाह लें। अपने कदम सफलता की ओर बढ़ाएं। कर्ज लिए हर पैसे का ब्याज 24 घंटे चलता है और आपका व्यापार 10-12 घंटा चलता है। कर्ज लेने के पहले हजारों बार सोचे तभी कर्ज लें।

सलाहकारों की फौज से अपने आपको बचाएं। हिन्दुस्तान में मुफ्त की सलाह देने वालों की लाइन लगी है। हर आदमी आपका सलाहकार बनना चाहता है। आपकी जीत का अवार्ड लेने के लिए सभी तत्पर हैं।

कर्ज लेने के पहले कर्ज क्यों लेना चाहते हैं सोचें। कर्ज लेने के बाद व्यापार की परिस्थिति क्या होगी? पैसा लगाने के बाद व्यापारिक परिस्थिति में कितना बदलाव आएगा? सरकारी नियमों में क्या लाभ मिल सकता है? आपके व्यापारिक सलाहकार (बिजनेस कोच) की क्या सलाह है? प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने वाले सलाहकार से सलाह लें, सीए से

सलाह लें। एक प्रतिभाशाली फाइनेंस कंट्रोलर नियुक्त करें। फाइनेंस कंट्रोलर किसे कहते हैं जो बैंक या मार्केट से फाइनेंस सलाहकार समयसे रि-पेमेंट कर सके उसे ही फाइनेंस कंट्रोलर कहते हैं। यह सब सलाह लेने के बाद परमात्मा तुल्य माता-पिता का आशीर्वाद लेकर श्री गणेश करें। पहला कदम कामयाबी की ओर बढ़ाएं। जीत उसी की होती है जो जीतना जानता है, जो जीतने की इच्छा रखता है। उपयुक्त कार्य करने के बाद व्यापार में सफलता मिलना कोई बड़ी बात नहीं है। सफल व्यापारी बन जाते हैं। सपने साकार हो जाते हैं।

शंखेश्वर तीर्थ में विश्वरत्न सागर जी की वात्सल्य वारिधी स्वरूप आगम वाचना

शताधिक साधु-साध्वी भगवंतों ने श्रवण की वाचना

शंखेश्वर तीर्थ में विराजित युवा आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्न सागर सूरेश्वर जी .म.सा.ने नियमित वाचना के माध्यम से कहा कि महावीर स्वामी ने अपनी अंतिम देशना में प्रभू को पता चल गया था कि मेरा निर्वारण निश्चित है। फिर भी 16 प्रहर की देशना अनावरत (लगातार) दी क्या प्रभु क्रिया नहीं करते थे। प्रभू की सभी क्रिया इंद्रमहाराज या देवी-देवता के माध्यम से पूरी होती थी। प्रभु ने उत्तराध्यायन सूत्र में 36 प्रकारों के कर्तव्यों का वर्णन किया है। इसमें प्रथम विनय की बात की गुरु के प्रति शिष्य, शिष्य के प्रति गुरु, माता-पिता के प्रति सूत्र का क्या विनय होना चाहिए। ज्ञान का आधार है विनय, अगर आपमें विनय नहीं है तो ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। आचार्य भगवंत आनंद सागरजी आगमज्ञाता थे। उनके सामने उसने बड़े आचार्य भगवंत उनके सामने नीचे बैठते थे। बसय ही बात विनय को दर्शाती है, क्योंकि गुरु तो गुरु ही होता है। द्रोणाचार्य ने कर्ण को पढ़ाने के लिए मना कहा लेकिन वह परशुराम के पास ब्राह्मण बनकर शिक्षा ली जब वास्तविकता का पता चला तो वह क्षत्रिय कुल



था फिर भी गुरु ने कर्ण के विनय, सेवाभावना को देखकर कहा कि तुने मुझे धोखा दिया फिर भी धनुष विद्या सिखाई और कहा कि अंतिम समय में यह विद्या काम नहीं आएगी ऐसा वर्णन रामायण में आता है मरे हुए को मारना कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन किसी का जीवन बचाना, गिरते हुए को सहारा देना यही बात विनय को

दर्शाती है। विशेष प्रकार की इच्छाओं को सहन करना परिषह है। परमात्मा से लेकर साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं को 22 परिषह सहन करने पड़ते हैं। साधुओं को विशेष प्रकार के दोषों का त्याग, अच्छी वस्तुओं, प्यास, ठंडा, गरम, मच्छर, वस्त्र, कर्तव्य, स्त्री, विहार, एकांत, भूमि, आक्रोश आदि बातों को सहन करना इसका

वर्णन परिषह में आता है। विपरीत परिस्थिति में समता का परिचय विनय की श्रेणी में आते हैं। इन परिषहों से माध्यम साधु की परीक्षा होती है। आराधना, सुख-दुख में सहभागी बने और धर्म के क्षेत्र में सहनशीलता, गंभीरता को विनय के माध्यम से समझे ऐसे वर्णन प्रभु ने अंतिम देशना में आगम सूत्र में बताया।

आचार्य श्री अपूर्वमंगल रत्नसागर श्रीजी की निश्रा में आचार्य-उपाध्याय-मुनि भिक्षा के साथ मालारोपण महोत्सव



बैंगलोर। यहां के श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर श्री संघ चित्रपेट तथा श्रीसंभवनाथ जैन श्री संघ वी.वी. पुरम जयनगर में चातुर्मास हेतु विराजित पूज्य पन्थास प्रवर श्रीमृदुरत्न सागरजी म.सा. तथा पन्थास श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. साध्वी श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की महत्वपूर्ण तपाराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप का प्रथम प्रवेश मुहूर्त 11 अक्टूबर को हुआ। 27 नवंबर को उपधान तप निमित्त भव्य वरघोड़ा आयोजित हुआ तथा उपधान मालारोपण 28 नवंबर को हुई। उपधान तप की सफलता हेतु तैयारियां चल रही हैं।



16 दिवसीय सूर्य मंत्राराधना से आध्यात्मिक पावर हाउस का सर्जनकर्ता किया युवा हृदय सम्राट आचार्यश्री विश्वरत्न सागर सूर्यश्वर जी म.सा.

सूर्य मंत्र की पंचम पीढीका की आराधना करके नवरत्न गुरु की वार्षिक परम्परा को बनाए रखा। आचार्य देवश्री विश्वरत्न सागर सूर्यश्वरजी म.सा. ने। 16 दिवस तक पंच प्रस्थान की साधना गौतमस्वामी की विशिष्ट उपासना सूरिमंत्र का 100000 जाप का अनुष्ठान तो प्रतिदिन 8 से 10 घंटे की जाप साधना। गुरु के आशीर्षों की होती अमीवर्षा जब तक गुरुदेव विराजमान थे। तब तक साहेब साधना करते थे और युवाहृदय सम्राट श्रीसंघ को भवतुर्वर्ग को सम्भालते थे।

परंतु इस बार इस शिष्य ने अपने मैनेजमेंट गुरु के विरुद्ध को हटाकर गुरुदेव श्री की सूरिमंत्र पिढीका को अखंड रखकर सूरिमंत्र समाराधक बनकर भक्तों के गुरु की कमी की पूरा किया।

तो गुरु की परम्परा को आगे बढ़ाया अनेक विधानों अष्टानों साधना उपासना का भंडार है सूरिमंत्र की आराधना तो संघ का नेतृत्व करने का सूक्ष्म बल सूरिमंत्र की उपासना। तीर्थंकर की अनुपस्थिति में सूरिमंत्र आराधना ही उन्हें तीर्थंकर के समान बनाती है। जहां प्रभु के शासन को चलाने का संबल मिलता है।

- इस आराधना को करने से गुरु की कृपा का फल मिलता है।
- भक्तों को हर समस्याओं का हल मिलता है।



- साधना खंड में जिनशासन रक्षक अनेक देव-देवी अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होते हैं, जिनकी साक्षात अनुभूतियों को आचार्य देव श्री विश्वरत्न सागर सूर्यजी ने अनुभव किया है।
- इस आराधना में श्रीफलों का स्वतः वदरना संकेत देता है। तो वासक्षेप में स्वास्तिक का होना देव देवियों की उपस्थिति को बताता है।
- देव देवीय की अनुभूति का तो अनुभव तो आचार्य देव ने किया है। उसे शब्दों में बांधना मेरे लिए शक्य नहीं है।

जिस तरह आप शकर को खाते हैं और उसकी मिठास को शब्द नहीं दे सकते हैं ठीक उसी तरह इस आराधना का अनुभव तो गुरुवर ने किया उनकी अनुभूतियों को वे शब्दों में पिरोने का सामर्थ्य नहीं रखता हूं। बस इस सूरिमंत्र की आराधना ने कही ने कही हमारे दिलों के भगवान नवरत्न गुरु की कमी को पूरा करने में बहुत प्रयत्न किया है। गुरुदेवकी उपस्थिति के बिना यह संभव ही नहीं है। आचार्य विश्वरत्नसागर सूर्यश्वरजी म.सा. की साधना इस बात का सवृत है। गुरुदेव हर पल हमारे साथ है, क्योंकि उनके बिना साधना का 'स' भी नहीं बनाया जा सकता है। मालवा के भगवान के पुजारी में हमें मालवा के भगवान की छवि दिखने लगी है।



सागर समुदाय की श्रावक प्रवर समिति की बैठक में हुई चर्चाओं की जानकारी श्रमण एवं श्रावक वर्ग के लिये

घसोई। सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा, अजातशत्रु पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्यपाद आचार्य सूरीश्वरजी महाराजा, अजातशत्रु पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पुण्य पावन निश्रा में सागर समुदाय की श्रावक समिति की बैठक का आयोजन किया गया। १९ अक्टूबर को हुई मीटिंग में बैठक के पूर्व पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री को वंदन करने पर आपश्री ने सभी को मंगल आशीर्वाद दिये। बैठक में गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा राजस्थान प्रांत से सागर समुदाय के २१ वरिष्ठ श्रावकों ने भाग लिया। बैठक में सागर समुदाय के श्रमण और श्रावक वर्ग से संबंधित बहुत से मुद्दे पर चर्चा की गई। आप सबके सूचनार्थ जिन बिन्दुओं पर गंभीर चिंतन किया गया वह आपकी जानकारी के लिये प्रकाशित कर रहे हैं- डॉ. सुभाष जैन

- * सवत् २०७२-२०७३ का वर्ष हम सबके लिये सिरताज पूज्यपाद आगमोद्धारक गुरुदेव श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा के संयम जीवन का १२५ वां वर्ष है।
- * आगामी वर्ष २०७३ यह पूज्यपादश्री के श्रीमुख से हुई ७ आगम वाचना तथा सूरत में हुई आगमवाचना का सौवां वर्ष है।
- * सवत् २०७३ की महावद-५ पालीताना आगम मंदिर में दादा के शिखर पर ७५ वीं ध्वजारोहण का वर्ष भी है वहां पर ध्वजा के पहले आगमवाचना का सप्ताह मनाया जावेगा।
- * सवत् २०७४ की वैशाख सुदी-१० का पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री के आचार्य पद की प्राप्ति का १०० वां वर्ष रहेगा इसके निमित्त सूरत में सागर समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों की पूज्य निश्रा में सूरी पद शताब्दी पर्व मनाने का निश्चय किया गया है। इसकी योजना पालीताना में प्रतिष्ठा वाचना प्रसंग पर विचार कर फाईनल की जावेगी।

- * पालीताना आगम मंदिर प्रतिष्ठा प्रसंग के साथ दीक्षा बड़ी दीक्षा पद प्रदान, १०० ओली पारणा आदि प्रसंग समुह में आयोजित हो यह प्रयास रहेगा। स्वास्थ्य आदि को देखते हुए आप सभी पालीताना प्रसंग पर समुदाय के गौरव को ध्यान में रखते हुए आने की भावना रखना।
- * श्री जीरावला ट्रस्ट मंडल के द्वारा श्री जीरावला पार्श्वनाथजी तीर्थ में प्रतिष्ठा के प्रसंग पर पूज्यपाद गच्छाधिपति से विनंती की गई है परन्तु समुदाय का प्रसंग (पालीताना) दो वर्ष पूर्व ही निश्चित हो गया था इसलिये पूज्यश्री को जीरावला जाने की अनुकूलता नहीं होगी। सागर समुदाय की ओर से आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. श्री जीरावला महातीर्थ में समुदाय का प्रतिनिधित्व करेंगे।
- * आसोज सुदी-८ को घसोई में सागर समुदाय के श्रमणोपादक प्रवर समिति के मुंबई, सूरत, अहमदाबाद, मालवा, राजस्थान के २१ पुण्यवंत श्रावकों की मीटिंग हुई थी। समुदाय के उत्कर्ष के लिये तथा सागर समुदाय के तेजस्वी तथा हीरा समान साधु-साध्वी भगवंतों के लिये सरस तथा विस्तार्थ से चर्चा हुई और एक स्वर में एक मत से यह निर्णय मेरी निश्रा में लिये गये जो आपकी जानकारी में लाये जा रहे हैं।
- * सवत् २०१३ और २०७४ के कार्य में मालवा गुप के समस्त साधु-साध्वीजी भगवंत मालवा में ही चार्तुमास करें, कोई विशेष कारण हो तो गच्छाधिपतिजी की आज्ञा के बगैर अन्य क्षेत्र में चार्तुमास की स्वीकृति न दें, यह गच्छाधिपति से यह विनंती की गई कि आपश्री किसी विशेष कारण को छोड़कर मालवा गुप के सभी साधु-साध्वीजी को मालवा में ही चार्तुमास करने की आज्ञा करें तो अच्छा करेगा।
- * सवत् २०७३ को वाचना शताब्दी वर्ष के रूप में मनाये पूरे वर्ष में आगम वाचनाओं, आगम से संबंधित उत्सक छोटे बड़ों को आगम कठस्थ कराना, आगम मंदिर की जानकारी देना, आगम सार वाचना में देना, आगम पूजन, वंदन जाप आदि आयोजन करना, साधु-साध्वी भगवंत दश वैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, आचरांग सूत्र, ओघ पिंड,

- नियुक्ति, आवश्यक सूत्र, आचारांग सूत्र, पयन्नादि सूत्र तथा विशेष योगी आगम को कठस्थ करें। इसके अलावा आगम बहुमान के लिये आगम की रथयात्रा आदि के द्वारा पूज्यपाद सागरजी म.सा. की वाचना करें। जग प्रसिद्ध करवाये।
- * सवत् २०७४ के वर्ष में सूरीपद वर्ष को किस तरह से भव्य रूप से मनाये इसके बारे में आगे जानकारी देंगे।
- * समुदाय के प्रत्येक गुप के छोटे-बड़े साधु-साध्वी भगवंतों ने चार्तुमास के लिये जिन क्षेत्रों का पसंद किया है वहां के ट्रस्ट मंडल को जय बुलवाने के लिये पूज्य गच्छाधिपति के पास ही भेजे और जिनको जय बुलाना है वे इस वर्ष पालीताना में महासुद-१० दिनांक ६ फरवरी २०१७ के दिन उस समय तक निश्चित हुए चार्तुमास के स्थानों के संघ ट्रस्टियों को जय बुलाने के लिये पालीताना भेजें। इस व्यवस्था से समुदाय की एकता, गौरव, व्यवस्था और अनुशासन के रूप में स्वीकार कर श्रावकों को जय बुलाने के लिये पालीताना भेजें।
- * सूर्यास्त के बाद किसी विशेष कारण को छोड़कर विजातीय के साथ संसर्ग-वार्तालाप बंद करें तो अच्छा रहेगा।
- * हमारे समुदाय के खास क्षेत्रों सूरत, कपड़वंज, लुणावाड़ा पालीताना आगममंदिर, अहमदाबाद वीतराग सोसायटी पालड़ी रतलाम नागेश्वर आदि स्थानों पर प्रतिवर्ष साधु-साध्वी को जाना ही चाहिये।
- * चार्तुमास के फार्म नहीं भरकर भेजनेवाले गुप के लिये यह सूचना है कि आगे से इसका ध्यान देने की विनंती की है।
- * पालीताना में सामुहिक रूप से हुए सम्मेलन में लिये गये निर्णय के अनुसार साध्वी भगवंतों के लिये वैद्यवाच व्यवस्था सवत् २०७३ की कार्तिक वद-१ से चालू करने में आ रही है।
- अ- गुजरात में विहार के समय विहार में साथ रहनेवाले सेवक-सेविका के लिये पैसे के लिये आचार्यश्री सागरचंद सागर सूरीश्वरजी म.सा.से अथवा आचार्यश्री पूर्णचंद्रसागर

- सूरीश्वरजी म.सा. से सम्पर्क करें।
- ब- गुजरात में सूरत जानेवाले साध्वीजी म.सा. की विहार व्यवस्था-भूति का लाभ सुरेशभाईजी शाह मो.नं.०९८२४७-६५००० द्वारा दो वर्ष के लिये लाभ लिया गया है। साध्वीजी म.सा. से सूरत की ओर विहार करने पर सुरेशभाई को विहार कर लाभ देने की मेहरबानी करावें।
- स- मालवा-राजस्थान की ओर विहार व्यवस्था की जवाबदारी ३ वर्ष के लिये भूति का लाभ प्रदान करने के लिये आचार्यश्री जिनरत्नसागर सूरीश्वरजी, आचार्य श्री जितरत्न सागर सूरीश्वरजी एवं आचार्य श्री चंद्ररत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के प्रेरणा से गुरुभूतों ने लाभ लिया है। मालवा-राजस्थान में विहार के समय विहार भूति का लाभ देने के लिये निम्न मोबाईल पर सम्पर्क कीजिए-
- १- आचार्य श्री चंद्ररत्नसागर सूरीजी म.सा.- ९४२४४-२५५२७।
- २- प्रदीप भाई मंडोवरा, इन्दौर- ९८२७०-७१७७४
- ३- गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान को छोड़कर अन्य कोई भी राज्यों में विहार करते समय विहार भूति का लाभ देने के लिये आचार्य श्री चंद्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्यश्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. से सम्पर्क कीजिये। सूरत, मध्यप्रदेश और राजस्थान को छोड़कर अर्थव्यवस्था श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था के द्वारा की जावेगी। सम्मेलन के समय जिन-जिन गुप के गुरु भगवंतों और साध्वी भगवंतों ने विहार व्यवस्था के लिये स्व-प्रेरणा से तीन वर्ष के लिये फंड लिखवाया था और आपश्री पालीताना आगम मंदिर में पहुंचाने की व्यवस्था करने की मेहरबानी करावें। अन्य साधु-साध्वी भगवंतों को इस सामुहिक आगमोद्धारक वैद्यवाच निधि फण्ड में अपनी प्रेरणा से अर्थ व्यवस्था करने का भाव हो तो आपश्री सीधे-सीधे आगम मंदिर, पालीताना पेढी पर भेजने की कृपा करावें अन्य सूचना से समय-समय पर आपश्री को अवगत कराने में आवेगी।

सागर समुदाय के गौरव पूज्यपाद आचार्य श्री चंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा

पुष्प स्वयं सुन्दर है। उसे सुन्दरता का बाना पहनाने की आवश्यकता नहीं होती। पुष्प के सौंदर्य का वर्णन करना नहीं पड़ता, न ही उसकी याद में मृतिधाम बनाने होते हैं। फूल से प्रसारित सुवास ही उसका जीवन और दर्शन बन जाती है। उसे चाह नहीं होती कि कोई उसके पास आये और उसकी तथा उसकी महक की प्रशंसा करें। फूल की सुवास को संग्रहीत करने के लिये कलम कोंपी या केमरा सक्षम नहीं है। जैन शासन में ऐसा कई विभूतियों का उद्भव हुआ है, जिनकी साधुता की सुवास आज भी सर्वत्र फैली रही है। मालवोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. उन्ही पुष्पों में से एक है, जिसकी सुवास पर जन साधारण सश्रद्धा सभूति दीवाने हैं। वि.संवत् १९५० कार्तिक शुला ११ के दिन अहमदाबाद (दोशीवाड़ा की पोल) में श्री जेसिंगभाई की धर्मपत्नी सौ.प्रधानदेवी की रत्नकुक्षी से अवतरित इस बालक का नाम चिमनलाल रखा गया। आर्य संस्कृति और धर्म संस्कृति के अनुरूप चिमनभाई का जीवन माता-पिता के सात्विक संस्कारों से सुन्दर और सुहृद बना। बचपन से ही धार्मिक शिक्षा के प्रति आकृष्ट चिमनभाई दूज के चांद की भांति वृद्धिगत होते हुए पूज्य आचार्य श्री विजयनीति सूरीश्वरजी म. के सम्पर्क में आए। फलतः वे धर्मक्रियाओं में तत्त्वज्ञ आराधक के रूप में प्रसिद्ध हुए। धर्मक्रिया, तप और जप से जुड़े चिमनभाई के अन्तस्थल में संयम जीवन का बीजारोपण कब हो गया यह तो उन्हें भी ज्ञात नहीं हुआ। किंतु युवा वय में माता-पिता के आग्रहवश उन्हें विवश होकर लम्नग्रंथि में आबद्ध होना पड़ा। आपकी जीवन संगिनी थी सौ. फूलकुंवर देवी। संसारी जीवन व्यतीत करते हुए आप नियमित रूप से प्रतिक्रमण, पूजा, प्रवचन, श्रवण, आर्यबिल आदि के माध्यम से अपने लक्ष्य से जुड़े रहे। आपकी आँखों में परमात्मा का शासन और रजोहरण (ओघा) ही

तैरता रहता था। संयम प्राप्ति के लिये आपने अनेकविध अभिग्रह धारण किये। व्यवसायार्थ बम्बई में बसकर आपने अपनी धार्मिक प्रवृत्तियां जारी रखी और संसारी अवस्था में ही अपनी तेजस्वी मुखमुद्रा तथा प्रभावशाली व्रतुत्व से सैकड़ों आत्माओं को धर्मानुरागी बनाया। पायधुनी स्थित श्री गोड़ी पार्श्वनाथ मंदिर में आप अपने कल्याण मित्रों का नेतृत्व करते हुए धार्मिक क्रियाओं के माध्यम से सभी को सरोबार कर देते थे। आपने अनेक आत्माओं को वर्धमान तप की आराधना से जोड़कर स्वपुरुषार्थ से बम्बई कुभार टुकड़ा में आयम्बिल शाला की स्थापना की और सिद्धचक्र आराधक समिति का गठन किया। इस समिति द्वारा आज भी प्रतिवर्ष स्थान-स्थान पर हजारों आरधकों को ओली की आराधना करवायी जाती है। चिमनलाल पूज्य आगमोद्धारकसूरीजी की श्रुत समर्थता तथा संयम साधना से बहुत प्रभावित थे। परिणाम स्वरूप हृद वैराग्य को धारण कर संसार रूपी कीचड़ से निकलने के लिये तड़फने लगे। परन्तु धर्मपत्नी फूलकुंवरदेवी की प्रबल मोहदशा एवं बाधक मनोवृत्ति मार्गाविरोध बनती रही। पत्नी एवं साले के भय से पूज्य आचार्य श्री विजयनीति सूरीजी म.आदि भी चिमनभाई को दीक्षित करने का साहस जुटा नहीं सके। एकदा कल्याण मित्रों के साथ पौषध व्रत करते समय चिमनभाई के मधुरकंठ सरस्वती प्रफुटित हुई। भावातिरेक में एकाग्र होकर वे स्तवन गा रहे थे 'मने संसार

सेरी विसरी रे लो...।' तब एक मित्र ने सहसा कटाक्ष किया। चिमनभाई! वास्तव में आपको संसार के प्रति सच्चा वैराग्य उत्पन्न हो गया है? घबराइए मत, हम भी तुम्हारे साथ हैं। बस, अलमंद को तो इशारा ही काफी था। चिमनभाई ने सजाग हो, सभी को संयम स्वीकार हेतु अभिग्रह प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित करना आरंभ कर दिया। अपने मित्रवर श्री हीराभाई के दीक्षा प्रसंग पर आपकी अहमदाबाद में पूज्य आगमोद्धारकसूरीजी से भेंट हुई। आचार्यश्री ने कहा- पटवा! तम सबको दीक्षा के लिये प्रेरित करते हो, लेकिन स्वयं कब ले रहे हो? साहब! मैं तो तैयार हूं, आप पूज्य की देरी है, प्रत्युत्तर में चिमनभाई ने विनम्र हो अपनी विषम परिस्थिति से पूज्यश्री को अवगत किया। किन्तु सागरजी म. इस कार्य में माहिर जो ठहरे। उन्होंने चिमनभाई को हरी झंडी दिखा दी। निर्दिष्ट समयानुसार बम्बई में पूज्य आचार्य श्री विजय लक्षिसूरीजी म. के श्रीमुख से अट्टमतप का प्रत्याख्यान स्वीकार कर आपश्री अहमदाबाद आए और वि. संवत् १९४८ जेट कृष्णा ६ के शुभ दिन पूज्य आचार्यश्री सागरानंदसूरीजी म. के चरणों में दीक्षित हो मुनिश्री चन्द्रसागरजी बन गये। दीक्षा के समाचार वायुवेग से सर्वत्र प्रसारित हो गये। विरोध की आंधी अवश्य उठी किन्तु सागरजी म. की कुशलता से अल्पावधि में ही सब कुछ शान्त हो गया। बम्बई समाचार मिलते ही

डायाभाई, हीराभाई, शनाभाई, मूलचन्द भाई हठीसिंगभाई आदि ने भी अपने बिस्तर-बोरियाँ समेटने शुरू कर दिये और पूज्य सागरजी म. के सानिध्य में संयम स्वीकार कर मुनिश्री चन्द्रसागरजी के क्रमशः मुनिश्री देवेन्द्रसागरजी म., मुनिश्री हीरसागरजी, मुनिश्री सुबोधसागरजी मुनिश्री धर्मसागरजी, मुनिश्री हंससागरजी म. आदि नाम से शिष्य बन गये। ज्ञानी गुरुदेव के सानिध्य में मुनिश्री चन्द्रसागरजी म. ज्ञानध्यान की प्रवृत्ति में आकंट डूब गये और अल्पसमय में ही व्याकरण शास्त्र में पारंगत हो, आपश्री ने 'आनंद बोधिनी' टीका का सर्जन किया। आपकी विद्वता वाग्पटुता, प्रतिमा, स्थूलकाया, बुलंद आवाज तथा तप-त्याग, संयममय ओजस्वी साधना के बल पर अनेकानेक धर्म कार्य सम्पन्न होने लगे। आगमोद्धारक पूज्य आचार्यश्री के वरदहस्त आपको पालीताना में वि. संवत् १९९७ अगहन शुला ५ के दिन गणपद, अगहन शुला ९ के शुभ दिन पंच्यासपद और वि.संवत् २००७ माघ शुला १३ के शुभ दिन सूरत में पूज्य आगमोद्धारकाचार्यश्रीजी की भावनानुसार गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री माण्डियसागरसूरीजी ने आचार्य पद अर्पण किया। आपश्री ने श्रीपाल मयणासुन्दरी द्वारा की गई नवपद आराधना भूमि उज्जैन में श्री सिद्धचक्रआराधना तीर्थ की स्थापना कर श्री केशरियाजी की संदेह प्रमाण प्रतिमा का निर्माण

करवाकर सोत्साह उनकी अंजनशलाका करवायी और वहां जीर्ण-शीर्ण पाँच जिन मंदिरों का जीर्णोद्धार कर प्रतिष्ठा करवायी। आपश्री की पुनीत प्रेरणा से मालवा में अनेक स्थलों पर जीर्णोद्धार प्रतिष्ठाएं तथा आर्यबिलशाला, पाठशाला, उपाश्रय आदि की स्थापना हुई। प्रभासपाटन तीर्थ की अंजनशलाका- प्रतिष्ठा भी आपके सानिध्य में सम्पन्न हुई थी। आपश्री ने पूज्य आगमोद्धारक गुरुदेवश्री के प्रवचनों द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार करने हेतु सिद्धचक्र मासिक का प्रकाशन आरंभ किया। साथ ही आगम आदि अनेक ग्रंथों का सम्पादन कर तथा नवीन रचना कर मुद्रित करवाई। गुजरात, सौराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, आपश्री का विचरण क्षेत्र रहा है। जहां आपकी स्मृति आज भी कायम है। अनेकविध शासन प्रभावना के कार्यों में अहर्निश रात होने के उपरांत भी आपने ७० वर्धमान तप की ओली, १०८ नवपदजी की शाश्वती ओली, ज्ञानपंचमी, पौषदसमी, वर्षीतप आदि की तपाराधना की। आपश्री के स्वशिष्यों की संख्या १४ थी। वर्तमान में आपके लगभग ८०-८५ शिष्य-प्रशिष्य अनेकविध कार्यों के माध्यम से शासन की प्रभावना कर रहे हैं। वि.संवत् २०१९ चैत्र बिदी ६ के दिन सूरत में ८४ लाख जीवराशि के साथ क्षमापना कर 'अब मोहे ऐसी आय बनी' स्तवन श्रवण करते हुए, आपश्री का समाधिपूर्वक अवस्था में सूरत में देहावसान हुआ।

नवरत्न परिवार की एक पहल विहार सेवा ग्रुप का गठन

साधु-साध्वी, भगवंतों की करेंगे सुरक्षा

परम वीर के शासन की दो अमूल्य धरोहर जो हमारे दर्शन, ज्ञान, चरित्र को निर्मल बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं, वह हैं गिरिराज और गुरुराज, इन दोनों के अनंत उपकारों को हम हमारे जीवन में कभी भी विस्मृत न होने दें। उक्त विचार प.पू. आचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरेश्वर म.सा. ने नवरत्न परिवार के राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान 24-25 सितंबर को श्री शंखेश्वर तीर्थ में उपस्थित 2000 शासन भक्त युवाओं को संबोधित करते हुए कही।

प.पू. मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरेश्वरजी म.सा. दिव्य आशीर्वाद से नवरत्न परिवार जिनालय शुद्धिकरण अभियान के माध्यम से समग्र जिनमंदिर की सेवा में स्थानीय श्री संघों को अग्रसर किया है उसी तर्ज पर हमारे श्री संघों में पैदल विहार करके आने वाले साधु-साध्वी भगवंतों की सड़क दुर्घटनाओं को रोकने हेतु अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराने हेतु विहार सेवा ग्रुप का गठन कर हमारे जंगम तीर्थ स्वरूप साधु-साध्वियों की सेवा एवं सुरक्षा करने का संकल्प लिया।

प.पू. आचार्य श्रीमद विजय महोबोधि सूरेश्वरजी म.सा. द्वारा संस्थापित विहार सेवा ग्रुप से पधारे बड़ोदा, अहमदाबाद, भावसागर के 8-10 वक्ताओं ने गिरिराज सेवा और गुरुराज सेवा विषय पर प्रभावशाली वक्तव्य प्रदान किया, जिसमें वहां उपस्थित युवानों ने भावना भावित होकर इन दोनों सेवा के लिए शुभ संकल्प लिया। 9 अगस्त 2-015 को इंदौर ह्रींकारगिरी तीर्थ में आयोजित साधारण सभा में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रीतेशजी ओस्तवाल के सुझाव अनुसार इस कार्य को क्रियान्वित करते हुए प.पू. आचार्य श्री महोबोधि सूरेश्वरजी म.सा. द्वारा संस्थापित विहार सेवा ग्रुप को हमारे क्षेत्र के सभी धामि4क एवं स्वयं सेवी संगठनों के वैयावच्ची प्रेमी युवाओं को जोड़कर इस विहार सेवा एवं गिरिराज सेवा अभियान को भी जिनालय शुद्धिकरण अभियान की तर्ज पर राष्ट्रव्यापी बनाने का शुभ संकल्प किया गया। नवरत्न परिवार की अगुवानी एवं श्री केशरिया आदिनाथ संघ मंदसौर द्वारा आयोजित विहार सेवा सम्मेलन के प्रारंभ में यवा संगीतकार एवं राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड सदस्य श्री त्रिलोक मोदी अहमदाबाद ने गुरुवंदना एवं शासन सेवा से ओतप्रोत स्तवनों के द्वारा इस अभियान का आगाज किया।

प्रखर युवा वक्ता श्री प्रज्ञेश भाई सूरत ने अपने संबोधन में कहा कि विगत कुछ वर्षों में विहार यात्रा के दौरान सड़क दुर्घटना में हमारे करीब 75-80 महात्माओं को गंवाया है, जिसके फलस्वरूप इन महात्माओं को विहार करने के पूर्व सोचने के लिए बाध्य होना पड़ता है। हमें अपनी परंपराओं को आगे बढ़ाना होगा। जिस उत्साह और उमंग के साथ हम गुरुभगवंतों को नगर में प्रवेश करवाते हैं उसी भाव के साथ उनके आगमन एवं प्रस्थान विहार के दौरान साथ में रहकर 12-15 किमी उन्हें पूर्व रूप से सुरक्षा प्रदान करनी होगी। कार्तिक सुदी 15 से आषाढ़ सुदी पूर्णिमा तक के 8 माह के भीतर हमें अपने-अपने क्षेत्रों में आने वाले सभी संप्रदायों साधु-साध्वी भगवंतों के विहार की संपूर्ण जानकारी अपने-अपने निकटवर्ती श्री संघों या विहार सेवा ग्रुप के सदस्यों को देनी चाहिए ताकि सभी को म.सा. के आगमन की विहार की, वैयावच्च की जानकारी मिल सके।

प्रार्थना मंडल भावनगर से पधारे श्री संजय

भाई शाह ने गिरिराज सेवा अभियान की विस्तृत जानकारी देते हुए तीन दिन गिरिराज सेवा हेतु समर्पित करने का अनुरोध युवाओं से किया। नवरत्न परिवार राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड अध्यक्ष सी.ए. प्रतीक डोसी ने विहार सम्मेलन में पधारे सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया एवं विहार सेवा से जुड़कर अभियान की सफलता हेतु शुभकामनाएं दी। नवरत्न परिवार राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन सुराणा ने युवा शक्ति को आह्वान करते हुए कहा कि जिनालय शुद्धिकरण अभियान के माध्यम से श्री संघों को जागृत कर परमात्मा भक्ति में एकजुटता की एक मिसाल है उसमें हमारी मुख्य भूमिका रही है। उसी प्रकार इस विहार सेवा अभियान से वैयावच्च प्रेमी युवाओं को जोड़कर हमारे क्षेत्र में आने वाले साधु-साध्वी भगवंतों को सेवा एवं सुरक्षा में अहम भूमिका निभाने की जिम्मेदारी नवरत्न परिवार के समस्त सदस्यों की है।

विहार सेवा ग्रुप बड़ोदा के श्री अंकुश दोशी ने इस अभियान की सफलता की शुभकामना देते हुए कहा कि इस कार्य हेतु गांव-गांव में विहार में जाने योग्य 5-5 कार्यकर्ताओं की टीम बनाकर प्रत्येक उपाश्रय धाम में एक बोर्ड लगाकर साधु-साध्वी भगवंतों के अवलोकनार्थ रखना चाहिए। साथ ही पूरे प्रदेश स्तर पर इसका केंद्रीयकरण करते हुए अधिक से अधिक संघ के युवा वर्ग को इस कार्य में जोड़ना चाहिए।

नवरत्न परिवार प्रदेशाध्यक्ष श्री रिखब बिजावत ने समस्त पदाधिकारियों एवं शाखा प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि जिनशासन का कोई कार्य करना नवरत्न परिवार का सौभाग्य है इस सौभाग्य को परमसौभाग्यशाली

बनाने हेतु हम सभी को सकरात्मक परिश्रम करना पड़ेगा। गांव-गांव, नगर-नगर में विहार सेवा की अलख जगाना पड़ेगी। एक विहार में तीन लोगों की तीन घंटे तक आवश्यकता होती है और सुबह जल्दी गुरुभगवंतों के साथ विहार में हमारा मोर्निंग वाक एवं विहार सत्संग भी हो सकता है।

नवरत्न परिवार के वरिष्ठ एवं पूर्व महासचिव श्री राजेश जैन ने सेवा के दो शुभ संकल्प को साकार करने के गुरु बताते हुए कहा कि इस अभियान का केंद्रीयकरण कर जिलास्तर पर प्रभारियों की नियुक्ति की जाएगी जो उनके जिले में विहार कर रहे

साधु-साध्वी भगवंतों एवं स्थानीय विहार ग्रुप के मध्य में एक कड़ी निर्माण का कार्य करेंगे। विहार सेवा के दौरान 3-3 रेडियम जॉकेट प्रत्येक ग्रुप को प्रदान करने हेतु नवरत्न परिवार ने एक योजना बनाई है। नवरत्न परिवार राष्ट्रीय महासचिव श्री राकेश मारवाड़ी ने इस विहार सेवा की सफलता में सभी श्री संघों से अपेक्षा संजोयी है। जिस पावन सहयोग से जिनालय शुद्धिकरण की सफलता का शिखर सर्जित हुआ है। उसी पावन सहयोग की अपेक्षा से हो जंगम तीर्थ स्वरूप साधु-साध्वी भगवंतों की सेवा सुरक्षा के माध्यम से एक नए इतिहास का सर्जन करना है।

सेवा के दो शुभ संकल्पों के माध्यम से गिरिराज और गुरुराज सेवा से जुड़ने वाले उपस्थित युवाओं को राष्ट्रीय संरक्षक श्री ललित सी. जैन ने शपथ ग्रहण कराई। साथ ही संबोधित करते हुए कहा कि नवरत्न परिवार इस विराट कार्य में विशाल हृदयता के साथ अविस्मरणीय इतिहास का सर्जन करेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

साधु-साध्वियों की पसंद बने विहार में जाने वाले युवा वर्ग आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरि का संदेश

श्री शंखेश्वर तीर्थ में विराजित प.पू. मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्न सागर सूरेश्वरजी म.सा. के गुरुकृपा पात्र एवं जिनशासन हितचिंतक युवा हृदय सम्राट आचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरेश्वरजी म.सा. ने अपने आशीर्वाद संदेश में कहा कि इस जगत के सात अजूबे तो निर्जीव वस्तुओं के हैं जबकि वर्तमान जगत का सबसे बड़ा अजूबे तो पैदल विहार करते हुए जैन समाज के साधु-साध्वी भगवंत हैं जो इस पंचमकाल में गामानुगाम हजारों किलोमीटर का पैदल विहार करते हुए प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करते हैं। प.पू. युवा हृदय सम्राट आचार्य श्री ने अभियान की सफलता का आशीर्वाद प्रदान करते हुए, अपने संदेश में कहा, प.पू. आचार्य श्री विजय महाबोधि सूरेश्वरजी म.सा. का सूरेश्वरजी म.सा. का इस कार्य हेतु प्रबल पुरुषार्थ एवं पावन प्रेरणा की अनुमोदना करता हूं। साथ ही यह कामना करता हूं कि भिवंडी, मुंबई, सूरत, बड़ोदा की तरह हमारे क्षेत्र भी विहार सेवा में अग्रणी बनें।

युवा हृदय सम्राट आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरेश्वरजी म.सा. ने नवरत्न परिवार, नवकार परिवार, युवक महासंघ, श्वेताम्बर जैन युवा मंच, जैनानंद युवक मंडल, सोशल ग्रुप, राजेन्द्र नवयुवक परिषद के युवाओं को आगाज करते हुए कहा कि साधु-साध्वी की विहार यात्रा के दौरान होनी वाली दुर्घटना आपकी उदासीनता का कारण है। इस उदासीनता को भगाकर आप सभी को संगठित एवं संकल्पित बनने की आवश्यकता है और आप सभी अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय बन गए तो हमारी युवा शक्ति मेवाड़, वागड़, मालवा में आने वाले साधु-साध्वी भगवंतों की पहली पसंद बन जाएगी।



नवरत्न महिला मंडल द्वारा नवपद ओलीजी में पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजन सम्पन्न

उज्जैन। ऋषभदेव छगनीरामजी की पेढ़ी श्रीपाल एवं मयणासुंदरी की आराधना स्थली खाराकुं आ पर परम पूज्य उपाध्याय श्री विमलकीर्तिजी म.सा., प.पू. गणिवर्यश्री रत्नकीर्ति म.सा., साध्वी श्री विजेताश्रीजी म.सा. की निश्रा में आसोज माह की 9 दिवसीय नवपद ओलीजी में नवरत्न महिला मंडल द्वारा पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजन, नवपद पूजन, वेदनीयकर्म निवारण पूजन, ज्ञानावरणी पूजन, नवानु प्रकार की पूजन पढ़ाई गई। नवपद ओलीजी के लाभार्थी पालनपुर निवासी श्रीमती लीलाबेन नगीनदास अजवानी परिवार की तरफ से संपूर्ण लाभ लिया गया। 9 दिवसीय आराधना से 200 तपस्वियों ने भाग लिया। पूजन में नवरत्न महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती पदमा जैन, श्रीमती मधुलिका सिरोलिया, प्रिया सालेचा, राजकुमारी, सविता कोठारी, शशि जैन, माधवी तरवेचा, रंजना सुराना, लक्की नाहर, संगीता चौधरी, खुशबू तरवेचा, सुशीला सिरोलिया, सीमा जैन, ईना सालेचा एवं मंडल की सभी महिला उपस्थित थी। उक्त जानकारी नवरत्न महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती पदमा जैन ने दी।

उपधान तप के साथ सूरिमंत्र आराधना

युवाहृदय सम्राट की सूरिमंत्र महासाधना पर विराट नववर्ष की महामांगलिक

आराधना हेतु विशिष्ट
गुफा की संरचना

मणियार परिवार द्वारा
ऐतिहासिक चातुर्मास

चातुर्मास पश्चात तीन
मुमुक्षुओं का दीक्षा महोत्सव

शंखेश्वर। कलिकाल कलपतरु श्री शंखेश्वर महातीर्थ की धन्य धरा पर अनेक जिनशासन प्रभावक आयोजनों के कीर्तिमान का शिखर स्थापित करने वाले प.पू. मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्न सागर सूरिश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न आचार्यश्री विश्वरत्न सागर सूरिश्वरजी म.सा. गत 16 अक्टूबर से स्वयं के साथ-साथ विश्व के कल्याण की कामना हेतु वार्षिक सूरि मंत्र की विशिष्ट आराधना में प्रवेश किया।

श्री मणियार वेलजीभाई मणिकचंद परिवार के तत्वावधान में गत 18 जुलाई से 1 नवंबर तक सैकड़ों आयोजकों ने लाखों भाविकों के मन में धर्म एवं श्रद्धा के बीज अंकुरित किए हैं। जिनशासन हितचिंतक उपाध्याय श्री विश्वरत्न सागरजी म.सा. के मार्गदर्शन में 1000 आराधकों की द्विमासिक चातुर्मास आराधना की पूर्णाहुति के पश्चात 11 अक्टूबर से श्रावक जीवन की दीक्षा स्वरूप महामांगलकारी उपधान तप आराधना का शुभारंभ हुआ।

उपधान के शुभारंभ के चार दिन पश्चात ही आचार्य श्री 16 दिन की मौनपूर्वक सूरि मंत्राधना की पीढ़िका में विराजमान हो गए हैं। इस



मंत्राराधना के लिए विशेष गुफा की रचना की गई है, जिसमें पूज्यश्री प्रतिदिन 14 से 16 घंटे तक उपवास, आर्यबिल, एकासणा के साथ बिना किसी का स्पर्श किए स्त्री मुख देखे बिना इस आराधना में लीन बने रहे। 16 दिवसीय महासाधना की पूर्णाहुति कार्तिक सुदी एकम 31 अक्टूबर को पूर्ण हुई जिस पर सकल विश्व का कल्याण करने वाली परमपूज्य मालवभूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरिश्वरजी म.सा. की महामांगलकारी श्रवण कराया।



प्रेषक

RNI NO.-MPHIN/2011/37953

राकेश मारवाड़ी, प्रधान संपादक



नवरत्न परिवार का राष्ट्रीय मासिक मुखपत्र

नवरत्न संदेश

208 शिवा कॉम्प्लेक्स रीगल चौराहा एम.जी. रोड, इन्दौर

नवरत्न संदेश

Postal Reg. NO.MP/ICD/1371/2014-16

प्रति,

श्रीमान

.....

.....

पिन

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक प्रेमकुमार डुंगरवाल द्वारा कुमार इंजीनियर्स ऑफसेट प्रिंटर्स 19/1 मनोरमागंज पलासिया सर्कल एबी रोड, इंदौर से मुद्रित 12 प्रेस काम्प्लेक्स ए.बी. रोड इन्दौर प्रकाशित। संपादक- राकेश मारवाड़ी मो. 94143-08595 (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा)